उ॰प्राणआदिपांचोंवायुवचनआदिपांचोंइंद्रीयुतकेसमूहकोंप्राणमयकोश कहनेहैं॥प्र॰मनोम
यकोश कौनहै॥उ॰मनऔपांचोंज्ञानेंद्रियमिलकरमनोमयकोश कहलाहै प्र॰ विज्ञानम
यकोश कोनहै॥उ॰ बुद्धिऔपांचोंज्ञानेंद्रीयुतकेसमूहकोंविज्ञानमयकोश कहनेहैं॥प्र॰ आ
नन्दमयकोश किसेकहनेहैं॥उ॰जिसमेंप्रियऔआनंदादिकभासमानहोतेहै ऐसेअप

प्राणादिपञ्चवायवोवागादीन्द्रियपञ्चकंप्राण
मयःकोशःमनोमयःकः २४ मनश्चज्ञानेन्द्रि
यपञ्चकंचमिलित्वामनोमयःकोशःविज्ञान
मयःकः २५ बुद्धिज्ञानेन्द्रियपञ्चकंचमिलि
त्वाविज्ञानमयःकोशः आनन्दमयःकोशः
कः २६ प्रियमोदादिकलितम् स्वस्वरूपा
ज्ञानंयदस्तितदानन्दमयःकोशः एतत्को
शपञ्चकंचमदीयशरीरंमदीयाःप्राणाम
दीयंमनोमदीयाबुद्धिर्मदीयमज्ञानमिति

नेसवरूपकेअज्ञानकोंआनन्दमयकोश कहनेहै इनपांचोंकोशोंसे यहमेरास्थूलहैं ऐसे
ऐप्राणहै यहमेरामनहै यहमेरीबुद्धिहै यहमेराअज्ञानहैं ॥ ॥

सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा को तैजस कहते हैं सुषुप्ति अवस्था के
कहते हैं मैं नेक न कुछ जानता सुख से सोता इस ज्ञान को सुषुप्ति अवस्था कहते हैं इस अ
वस्था के ओ कारण शरीर के अभिमानी आत्मा को प्राज्ञ कहते हैं पंच कोश कहा है।
अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयआनन्दमय इन्हीं को पाँचों कोश कहते हैं

सूक्ष्मशरीराभिमान्यात्मातैजसइत्यु
च्यते सुषुप्त्यवस्थाका २० अहंकिमपि
जानामिसुखेनमयानिद्रामनुभूयत इतियत्
सुषुप्त्यवस्था इतिवस्थाकारणशरी
राभिमान्यात्मा प्राज्ञइत्युच्यते पञ्चकोशाः
के २१ अन्नमयःप्राणमयोमनोमयोविज्ञा
नमयआनन्दमयश्चेति अन्नमयः कः २२ अ
न्नरसेनैवभूत्वान्नरसेनैवाभिवृद्धिमाप्या
न्नरूपपृथिव्यांयद्विनियतोसोऽन्नमयकोशः

प्राणमयकः २३

अन्नमयकोश किसे कहते हैं अन्न के रस से उत्पन्न हो कर उसी से वृद्धि पाकर अन्नरूप पृ
थ्वी में जो लीन हो जाय उसे अन्नमय कोश कहते हैं॥१॥ प्र० प्राणमय कोश किसे कहते हैं

उनभागोंको अपने आधेभागको छोड़कर और चारोंभूतों के आधेभागसे

इस

एकदन्तगलतप्रतीमन्त्रोद्धारकीरा

स्वार्द्धमिन्नेष्वर्द्धेषु स्वभागचतुष्टयसंयोजनं पंचीकरणं भवति ॥
नेभ्यः पंचीकृतपञ्चमहाभूतेभ्यश्चतुर्विधशरीरं ब्रह्माण्डं
ब्रह्माण्डमध्येचतुर्दशभुवनानि समस्तानि स्थूलशरीराभिमा
नि जीवनामकं ब्रह्मप्रतिबिम्बं भवति तेष्वेव जीव आत्मत्वेव
ब्रह्मत्वाजीवेश्वरभेददृष्टिंकरोत्यथ कथमिति चेत् अविद्यो
पाधिः सन्नात्मा जीव इत्युच्यते मायोपाधिः सन्नात्मा च
ईश्वर उच्यते

आकाशके राजस अंससे वचनेंद्रिय वायुके राजस अंससे हस्तेंद्रि तेजके राजस अंससे पादेंद्री जलके राजोगुण अंससे गुदेंद्रिय पृथ्वीके राजस अंससे उपस्थेंद्री होती हैं इन पांचोंके राजस अंसको समूहसे पांचों प्राण उत्पन्न होताहै तमोगुण प्रधान इन पांचौं तत्वोंके पंचीकरणसे पांचौं महाभूत उत्पन्न होते हैं प्र० पंचीकरण किसतरहसे होताहै उ० इनको

एतेषां पंचतन्मात्राणां मध्ये आकाशस्य राजसांशाद्वाग्गिन्द्रियं समुत्पद्यते वायोराजसांशात् पाणीन्द्रियं समुत्पद्यते वह्नेराजसांशात् पादेन्द्रियं समुत्पद्यते जलस्य राजसांशात् पायविन्द्रियं समुत्पद्यते पृथिव्या राजसांशात् पृथेन्द्रियं समुत्पद्यते एतेषां पंचतन्मात्राणां समष्टिराजसांशात् प्राणपंचकं समुत्पद्यते एतेषां पंचतन्मात्राणां तमोगुणप्रधानानां पंचीकरणेन पंचमहाभूतानि भवंति पंचीकरणं कथम् ३१ एतेषु भूतेषु एकमेकं भूतं द्विधा समं विभज्य एकमेकभूतस्यार्धमर्धं चतुर्धा समं विभज्य

चौंतत्वोंमेंसे एक एकको दोदो भाग करके सबोंके एक एक भागको जुदा जुदा धरो हर एक के दूसरे भागोंको लेकर चार चार भाग बराबर करो

प्र॰ समाधानक्याहै॥उ॰ चित्तकीएकाग्रता॥ प्र॰ मुमुक्षुत्वक्याहै॥प्र॰ मोक्षहोनेकीइच्छाकाहै॥उ॰ मे
रेमोक्षहोजायऐसीदृढइच्छा॥४॥ इहिचारोंप्रकारकेसाधनचतुष्टयकहनेहैं येजिनपुरु
षोंमेंहैं वेनित्यविवेकके अधिकारी होतेहैं॥प्र॰ नित्यविवेककिसेकहतेहैं॥उ॰ आत्मास
िवै इसप्रपंचमिथ्यासवरूप है ऐसेज्ञानकोनित्यविवेककहतेहैं॥प्र॰ आत्माक्याची

समाधानं १० चित्तैकाग्रता मुमुक्षुत्वंकिम् ११
मोक्षोमेभूयादितिदृढेच्छा एतत्साधनचतुष्टय
सम्पन्ना नित्यविवेकस्याधिकारिणोभवन्ति न
चविवेकः कः १२ आत्मासत्यंजगन्मिथ्या सर्वमि
दंप्रपंचमिथ्यैवेतिज्ञानमेवआत्माकः १३ स्थूलसूक्ष्मकारण
शरीरव्यतिरिक्तोयस्थात्रयसाक्षिसच्चिदान
न्दस्वरूपोयस्तिष्ठतिसआत्मास्थूलशरीरंकिम्

१४

ंहै॥उ॰ स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरसेभिन्नतीनोअवस्थाकासाक्षीसत्यज्ञानआनं
दस्वरूपजोवस्तुहै वहीआत्माहै प्र॰ स्थूलशरीरकिसेकहतेहैं

नित्यानित्यवस्तुविवेकः इहामुत्रार्थफलभोगविरागः कः ३ शमदमकरुणोपरतितितिक्षाश्रद्धासमाधीनां भोगेच्छाराहित्यमेव शमादिषट्कसम्पत्तिः का ४ शमोदमउपरतितितिक्षाश्रद्धासमाधयश्चेन्निग्रहः कः ५ श्रोत्रादिचक्षुनिग्रहः दमः कः ६ पञ्चेन्द्रियनिग्रहः उपरतिः का ७ प्रमादेभ्यउपरमणमुपरतिनिष्ठा का ८ शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुत्वम् अद्धा का ९ गुरुवेदान्तवाक्येषु विश्वासः

प्र० दम किसे कहते हैं ॥ उ० बाह्य इंद्रियोंका रोकना ॥ २ ॥ प्र० उपरति किसे कहते हैं ॥ उ० संसारसे निवृत्त होना ॥ ३ ॥ प्र० तितिक्षा किसे कहते हैं ॥ उ० शीतउष्ण होनेका सहना ॥ ४ ॥ प्र० श्रद्धा किसे कहते हैं ॥ उ० गुरुओं वेदवाक्योंमें विश्वास करना ॥ ५ ॥

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal colleciton of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai
Date of Birth: 31 December 1960
Place of Birth: Kathmandu, Nepal
Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications
Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology
Master's Degree – Sociology & Anthropology
Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience
Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)
Taught at Secondary Level (Madhyamik)
Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)
Served as Head Teacher
Led academic and administrative development
Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest
Sanskrit Vyakaran
Spiritual & Philosophical Studies
Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust
Funding by MIDF, New Delhi